International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

हरियाणा के संत साहित्य में चित्रित परमात्मा का निराकार या अव्यक्त रूप

शोधार्थीः प्रमिला चौधरी विजय नगर, भिवानी। शोध निदेशिका : डॉ०सरोज चौधरी हिंदी विभाग सिंघानिया विश्वविद्यालय,

झूंझनू राजस्थान।

किसी भी देश संस्कृति,आध्यात्मिक भाव चाहे वह किसी भी रूप में प्रयुक्त होता रहा है, वह परमतत्व की सत्ता की एक पारखी अंश होता है। वेद श्रुति पर आधारित है व लोक–साहित्य भी श्रुति पर आधारित है। लोकजन जो कुछ सुनता है उसे ही छंद, अलंकार, विद्वता से परे हटकर स्वानुभूति के उद्‌गार उद्‌भासित कर देता है, जो मर्मस्पर्शी होते हैं व लोक प्रचलन में जन–जन का कंठाभरण बन जाते हैं। हरियाणा के लोक साहित्य के अध्याय के चारों तत्व अपनी मर्मस्पर्शी भावना सहित उपलब्ध होते हैं पं. लख्मीचंद के भी स्वयं उस परमतत्व विषयक धारणा व्यक्त की है जो वर्णाथली से संबंध रखती है।[9] हरियाणवी लेखक दयाचंद ने उस परमतत्व के निराकार रूप को मान्यता प्रदान की है–

निराकार या अव्यक्त रूपः

मन के मणिया श्वास डोर चुपचाप रटन की माला।
पांच इंद्री बस मैं करके जब बनै रटन आला।
भगवा कपड़े भस्म रमा ले इकतारा लैके
बेरा ना कित ज्या सै चाला जग सारा लैके
भक्ति के नाम मिटेन लगो क्यूं गारा लैके
सतगुरू मुंशी धाम ज्ञान का उपकारा लैके

[1]श्रीमद्‌भगवतद्‌गीता १८/१४

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

इस दयाचंद ने हंस बनादे से कागा काला।[२]

पांच इंद्री .....।

कवि दयाचंद ने उस परमतत्व को प्राप्त करने के लिए कहीं अन्य नहीं अपितु, अंतरघट में ही गवेषणा करने को कहा है। कबीर साहेब ने इसी घटमंदिर में चौंसठ कलाओं की ज्योति का वर्णन किया है।[३] पं. श्री राम शर्मा आचार्य ने उसे सूक्ष्मीकरण, धर्मतत्व, मर्मतत्व, परमाणु की सत्ता स्वीकार किया है।[४] दयाचंद जी ने इन्ही सत्ता के अस्तित्व को संदिग्ध करना ही परमतत्व की प्राप्ति का साधन बताया है। आगे उन्होंने पौराणिक चिन्मयी सत्ताओं का हवाला भी दिया है। आज किस प्रकार भगवा वस्त्र धारण करके उस 'परमपुरूष' के नाम का दुरूपयोग किया जा रहा है जबकि अंतर्मन की झांकियों का अवलोक करे बिना वह परमतत्व कदापि प्राप्त नहीं किया जा सकता है। क्योंकि कबीर, मीराबाई, गोरखनाथ, वाल्मीकि, नरसी, धन्ना आदि भक्त उस चिन्मयी सत्ता तक पहुंच चुके हैं व संत शिरोमणि गुरू रविदास जी स्वयं परमतत्वमय ही थे।

यह दुनियां तो एक सराय हे, नश्वर है माया की चकाचौंध से परिपूर्ण है। अथर्ववेद में जिसे विराट पुरूष[५] कहा है। शरीर को ब्रह्म की नगरी।[६] व अयोध्या नगरी[७] कहा है। जिसमें आठ चक्र व द्वार हैं। वेद, कंठ, एवं श्वेताश्वतर उपनिषदों में उस माया का विरोध किया है, जो विभिन्न योनियों में भ्रमित रहते हैं।[८]गीता में श्री कृष्ण ने जीव को तीनों अवस्थाओं से परै स्वरूप ज्ञानी धीरपुरूष को इसके परे बताया

[2]लेक कवि दयाचंद द्वारा रचित कविता,
[3]त्रिगुणायत, गोविंद (सं.), कबीर ग्रंथावली,
चौसठि दीवा जोइ करि, चौदह चंदा मांहि,
तिहिं धरि किसको चानिणौं, जिहिं धरि गोबिंद नांहि।। पृ. ७३
[4]शर्मा, श्री राम आचार्य, वाड्मय, ७, ८, २८, ३३, ३६, ५३ का सारांश
[5]अथर्व. ८.१०.१.१.१६.६.६
[6]वही, १०.२.३०
[7]वही, १०.२.३१
[8]कंठ २.२.१३ नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनामामेकों बहुनां यो विदधाति कामान।।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

है।[८] पं. लख्मीचंद ने भी उसी धारा में जगत को अज्ञान रूपी मल[९०] कहा हैं इस प्रकार लख्मीचंद ने विश्व की विषय घटनाओं की ओर संकेत किया हैं श्री दयाचंद जी ने उसका तात्विक विश्लेषण कर उस परमतत्व की सर्वव्यापकता पर बल दिया और विषयों को निराधार भ्रम की कपोल कल्पना कहा है यथाः–

ये दुनिया दो दिन की सरा है कर ले रैन बसेरा।
सुबह तेरा कूच है डेरा सुबह तेरा कूच है डेरा।।
समझ ले मौत का फेरा.....।
दूर जाना सफर लंबा सोच ले अब पीछा आगा
चाहे हो लोग घर बारी चाहे हो सन्यासी नागा
शाम ने आन के ठहरा सुबेर उठ भागा उठ भागा
आज आया काल ज्यागा देख संसार का फेरा
सुबह कूच.....।
गुरू मुंशी ज्ञान गंगा मिला भंडार गाने का
बनाना ठीक सही हमने मिस्त्री कारखाने का
गुण का मोल नहीं पाया रूप रंग एक आने का
दयाचंद गांव मायने का चारू कूच में डेरा।[११]
सुबह कूच.....।

वह परमतत्व असीम सत्ता का आविष्कारक है। उसकी सर्वव्यापकता प्रकृति के प्रत्येक अंश में पूर्णरूपेण व्याप्त है। मनुष्य भी उसी का एक अंश मात्र है, जबकि ज्ञानहीन प्राणी उसी विषय वासना, वन संसार की गतिविधियों को स्थायी समझ बैठता

[9]श्रीमद्भगवद्गीता २/१३
[10]शर्मा, पूर्णचंद (सं.) पं. लख्मीचंद ग्रंथावली, भूमिका
समझ ना सकते जगत के मन पै अज्ञान रूपी मल होग्या।
बेईमाने मैं मग्न रहैं सैं गांठ–गांठ में छल होग्या, पृ. ३५
[11]लोक कवि दयाचंद द्वारा रचित कवित,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

है यही उसकी सबसे बड़ी भूल है और वह मृगतृष्णा की भांति विचरता रहता है। कबीरदास जी ने उसे मायाजाल के भ्रमजान से मुक्ति प्राप्त करना आवश्यक बताया है। क्योंकि उससे मुक्ति पाना अत्यंत आवश्यक है।[१२] गुरू रविदास ने उसे अलख[१३] कहा जिसकी प्राप्ति में माया बाधक है।

यह संसार दुःखों का घर है। उस परमतत्व की प्राप्ति के अभाव में निःसंदेह मनुष्य मन बरगला रहता है। भगवान बुद्ध ने स्वयं संसार को दुःखों का घर बताया। अतः उसे चेतना को बुद्धाभिमुख करना आवश्यक है। राजेश अगव्राल ने कहा है– साधना का अर्थ है अपनी चेतना को ईश्वराभिमुख करना, उसे खोल देना, उसका वर्तमान अवस्था से चैतिक और आध्यात्मिक चेतना की अवस्थ में परिवर्तन करना।[१४] लख्मीचंद ने स्वयं मनुष्य को बताया है। उन्होंने कहा कि बिना ओम भजन के यह जीवन व्यर्थ ही है।[१५] दयाचंद जी ने अपनी मनसाभिव्यक्ति को इस प्रकार प्रकट किया है यथाः–

ओम नाम भूल गया तू कैसा इंसान रे
बहरा क्यूं बनै सै सुन ले मैं खोलूं तेरे कान रे।।
सोचन समझन लायक हुआ सब आंख मिचली
भजन की आन सीखली ले डूबे कार नीचली
आगली ना पिछली है बिचली शैतान रे.....।
बहुत सा कमाया फिर भी पूरा ना पटा
क्योंकि ॐ ना रटा तेरा दिन जा घटा

[12]त्रिगुणायत, गोबिंद (सं.) कबीर ग्रंथावली, पृ. ७५–७६
श्लोक, गुरूदेव को २२, २३, २४, ३०
[13]गौतम, मीरा, संत रविदास की वाणी और वर्तमान परिदृश्य, (सं) गुरू रविदास वाणी एवं महत्व, अलख अलह खालिक खुदा क्रिस्न करीम करतार, पृ. ४२०
[14]अग्रवाल, राजेश, सनातन धर्म का प्रसाद, पृ. ६
[15]शर्मा, पूर्णचंद, पं. लख्मीचंद ग्रंथावली,
ओऽम भजन बिन जिंदगी वृथाए गई,
ना रही, ना रहै, किसै की सदा ना रही, पृ. ६३३

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

आज डंटा कल चाल्या जाग्या दो दिन का मेहमान रे...।
के धन लै के जाग्या बंदे के लैके आया
भूलग्या ॐ ना गया देख के रूप गुरभाया
सुपने कैसी माया काया सब भूला तौफान रे.....।
हो सख्ती ना टाल काल तेरे शिश पै घोर है
तू बंधज्या भक्ति के डोर चाल साकोल के घोरै
सतगुरू मुंशी धोरे दयाचंद सीख ले ज्ञान रे.....।[१६]

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में ॐ की महत्ता सर्वाधिक है। शिष्ट साहित्य और अनिष्ट साहित्य दोनों में ही ॐ ही सत्ता एकमत स्वीकार की गई है। उस परमतत्व की अन्वेषणा साकार रूप में या निराकार रूप में की गई है। गुरू के समक्ष सभी ठिठक जाते हैं और उस परमतत्व को प्राप्त करने के लिए अज्ञानी से बन जाते हैं। गीता में श्रीकृष्ण स्वयं जीव को कहते हैं कि अपना सर्वस्व मुझे अर्पित कर दे निःसंदेह तू मुझे प्राप्त होगा।[१७] उस परमतत्व का रंग, रूप, आकार कैसा है? कुछ कहा नहीं जा सकता और उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है दयाचंद जी एक रचना के संप्रेषण से अपनी अभिव्यक्ति इस प्रकार प्रकट करते हैं–

कोई कृष्ण कोई राम कहे से दयाचंद सुखधाम कहैं सै
नां तेरे हम क्या क्या गिने इतना ना ज्ञान मनै।[१८]

छंद के संप्रेषण से कवि ने अलख, निरंजन, सोडहम, अव्यक्त, निराकार को सुखधाम की संज्ञा दी है। उस परमतत्व को क्या नाम है, कुछ कहा नहीं जा सकता है। कोई किसी नाम से उसे पुकारता है, कोई किसी नाम से, ऐसे में मैं क्या करूं? आत्मा

[16]लोक कवि दयाचंद द्वारा रचित कवित,
[17]श्रीमद्भवगद्गीता, १३/८,१३/९,१३/१०
[18]लोक कवि दयाचंद द्वारा रचित कवित

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

परमात्मा का ही अंश है। अतः अंश–अंशी में भेद कैसा?[१६] कर्म प्रधन मनुष्य ही उस परमतत्व का आचमन कर सकता है। कर्म का फल तो अवश्य ही मिलता है। जिसका विस्तृत वर्णन है।[२०] कबीर ने भी मनुष्य को चेताया है। उन्होंने लेखा देणां कहा हैं।[२१] दयाचंद ने भी कर्म की प्रधानता पर बल दिया है यथाः–

ले काट जिसे बौ के आया हंसते हंसते गया यहां से
अब वापिस रो के आया.....।
सुणन आले सुन रहै थे गाने वाला गा रहा था
लोक स्वभाव के कहण लग्ये भाई खूब मजा आ रहा था।
तू दयानंद कित जा रहा था मैं मायने मैं टोहके आया....।[२२]

कर्म का फल अवश्य मिलता है। अतः मनुष्य को शुभ कर्म का फल शुभ व अशुभ कर्म का फल अशुभ मिला है। गुरू ही आदि शक्ति का स्त्रोत है। वह प्रभु के वश में स्वर्ग के कल्पवृक्ष, चिंतामणि और कामधेनु है[२३] कवि दयाचंद ने उसे सुखधाम कहा है।

वेदों में जिसे व्यक्त–अव्यक्त कहा है सी परंपरा का अभिधान हरियाणा के लोकसाहित्य में मुखरित हुआ है। उपनिषद् ब्रह्म को सभी रूपों में मान्यता प्रदान करता है[२४] कठोपनिषद् में उसे शब्द स्पर्श रहित माना है। वह रूप रंग, गंध रहित है।[२५] वैदिक साहित्य में पांच मूल तत्वों का समावेश सन्निहित है, भगवत् तत्व, जीव स्वरूप,

[19]श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय, १३ श्लोक ८,९,१०
[20]लोक कवि दयाचंद द्वारा रचित कवित
[21]शर्मा, पूर्णचंद पं, लख्मीचंद ग्रंथावली
पुरूष की मूर्ति पृथ्वी, जल और वायु तेज आकाश तूं हीं
प्राण समूह छिद्र मैं रहता आत्मा का प्रकाश तू ही, पृ. ३३
[22]लोक कवि दयानंद द्वारा रचित कवित
[23]श्री गुरू ग्रंथ साहिब, रागु सोरठि बाणी,
सुखसागर सुरतर चिंता मनि कामधेनु बसि जाके, पृ ८३७
[24]बृहदारण्यकोपनिषद् से उद्धृत
[25]कठोपनिषद् से उद्धृत

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

ईश्वर नियंता उन्मत्त स्वरूप का प्रतिपादन[२६] कवि दयाचंद जी ने उसे सुखधाम बताकर मनुष्य योनि को सर्वश्रेष्ठ बतलाया है लेखक हरिनारायण ने उस परमतत्व को शब्द सुरत का मेल माना है, जो गुरू के बिना प्राप्य नहीं। यथा–

बड़े भाग तन पाइया, चुकै ना मूढ़ ग्वारा
फिर पाछे पछिताइयां, मत लादै सिर भारा
और मौका नहीं मिलिया, मानो वचन हमारा.....।

सच्चा शब्द गुरू का, यम फंद कटावन हारा
अटल धुन लायकै झख मारे संसारा
हरि० धुन लायकै, जौ लौ लीन गुरू का प्यारा.....।[२७]

हरिनारायण जी ने उस परमतत्व को निराकार बताकर उसे अनुभवगम्य बतलाया है, जो गुरूमुख व्यक्ति ही उसकी सुरति निरति लगाने में सक्षम है। अंतर्मन की अंतश्चेतना ही उस अगम[२८] तक पहुंचने में सक्षम है। वह परमतत्व ही संपूर्ण ब्रह्मांड का स्रजेत व पालनहार है। गीता में कृष्ण ने उसे अविनाशी जीवात्मा को ब्रह्म कहा है। जिसका नित्य स्वभाव अध्यात्म है और वह प्राकृत देहों की सृष्टि रूप कार्यक्रम कहलाता है।[२९] लोक कवि हरि. ने उसे 'अंतरगत धुन' की संज्ञा दी है। उस परमतत्व का वर्णन इस प्रकार किया है:–

सूरत शब्द को मिलाय के हेली, अजपा करै गुणगान
निज नाम लौ लाय के हैली, होवे आनंद सत्संग ज्ञान
हरि. हरषाय के हेली, नमों संत भगवान.....।[३०]

[26]श्रीमद्भगवद्गीता यथा रूप पृ. ६
[27]लोक कवि हरिनारायण रचित कवित
[28]कठोपनिषद् से उद्धृत
[29]श्रीमद्भगवद्गीता यथा रूप ८/३
[30]लोक कवि, हरिनारायण रचित कवित

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

उस परमतत्व को प्राप्त करने के लिए अंतदर्शन की अनिवार्यता आवश्यक है। प्रकृति और पुरूष को न मानकर, जब यह मान लिया गया, कि इस जगत की जड़ में परमेश्वर रूपी अथवा पुरूषोत्तम रूपी एक तीसरी राही नित्य तत्व है, प्रकृति तथा पुरूष दोनों उसकी विभूतियां हैं, तब सहज ही यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि उस तीसरे मूलभूत तत्व का स्वरूप क्या है? और प्रकृति तथा पुरूष से उसका कौन सा संबंध है? प्रकृति पुरूष और परमेश्वर इसी त्रयी को अध्यात्म शास्त्र में क्रम से जगत जीव और परब्रह्म कहते हैं।[३१] अव्यक्त और 'अक्षर' पारब्रह्म के लिए प्रयुक्त हुए हैं। सांख्यों की अव्यक्त प्रकृति के भी परे का दूसरा अव्यक्त तत्व जगत का मूल ही है। जो इंद्रिय अगोचर है, वही मेरा सच्चा स्वरूप है।[३२] पं. लख्मीचंद ने भी उस पारब्रह्म की अंश अंशी में भेद कैसा? कहा है। आत्मा-परमात्मा के गुण अभेद है।[३३] अथर्ववेद में ब्रह्म को पुरूष माना है। सुवर्णपुरी में रहने वाला ब्रह्म को यक्ष भी कहा जाता है।[३४] जिसको ब्रह्मदेवता ही समझ सकते हैं। हरियाणा के लोक-साहित्य में उस विराट पुरूष परमतत्व को सृष्टि का जनक माना है। यथाः-

तन मन वचन से बुरा काम ना करो रे कर्म की सजा से डरो रे
हरि. भजन करो रे, बहुरि जन्म ना हो रे।[३५]

उक्त रचना लोक साहित्य के अंतर्गत रखी जा सकती है। 'आदि' 'अलख' 'अभागी' वैदिक विचारधारा से पूर्णतः प्रभावित है। पं. श्री राम शर्मा आचार्य ने भी

[31]तिलक, बालगंगाधर (सं.) श्रीमद्भगवद्गीता रहस्य अथवा कार्मयोग शास्त्र, पृत्र. २०३
[32]वही,
अव्यक्तं व्यक्तिमापनं मन्यंते मामबुद्धयः पृ. २०५
[33]शर्मा, पूर्णचंद (सं.) पं. लख्मीचंद ग्रंथावली,
बृहम लोक मैं सृष्टि रचता ऐसा आत्मा धन है तूं
ब्रहम विभूति प्रजापति और विष्णु विभूति मन है तूं, पृ. ३३
[34]अथर्व० १०.२.३२
[35]लोक कवि हरिनारायण रचित कवित

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

उस अलख को प्राप्त करने के लिए सूक्ष्मीकरण[३६] पर बल दिया है। भगवती श्रुति में प्रलय के समय उस परमतत्व को ब्रह्म की संज्ञा प्रदान की है। ब्रह्म से तात्पर्य आत्मा से माना जा सकता है। आचार्य श्री राम शर्मा आत्मा को सात्विकता का केंद्र मानते हैं। उनके अनुसार मनुष्य के सूक्ष्म संस्थान के अंतर्गत ब्रह्मरंध्र जो षटचक्रों का अधिष्ठाता भी माना गया है।[३७] अतः उस परमसत्ता को प्राप्त करने के लिए मोह ममता का त्याग करना होगा तभी परमतत्व की मुक्ति संभव है।

निष्कर्ष

भारतीय साहित्य ही नहीं अपितु विश्व वाड्मय में भी योग को बहुत बड़ा हाथ है। आदि सत्ता को प्रकृति और पुरूष का योग कहा गया है तो चेतना को सूर्य व पृथ्वी का योग, जीव को आत्मा परमात्मा का योग, कहा है। गीता के अठारह अध्यायों को भी कृष्ण ने योग से उत्पन्न माना है। उन्होंने आत्मज्ञान[३८] ही योग का मूलाधार माना है। महर्षि पतंजलि ने योग से ही सृष्अि का उत्पन्न भाव स्वीकार किया है। यही शिष्ट साहित्य हरियाणावी संस्कृति में किसी न किसी रूप में श्रुति के आधार पर उद्भासित हुआ व योग का वर्णन विवेचन इस प्रकार किया है।

[36]शर्मा, श्री राम आचार्य, सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का आधार, वाड्मय, २८, पृ. ५
[37]खंडेलवाल, श्रीमती उषा, आध्यात्मिक मान्यताओं का वैज्ञानिक प्रतिपादन, पृ. ५३
[38]श्रीमद्भगवद्गीता
यतंतो योगिनश्चैनं प्श्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् १५/११